<u>प्रेस-विज्ञप्ति</u> 15.08.2021

दिनाँक 15 अगस्त, 2021 को सायं 05:00 बजे से सायं 07:00 तक मर्चेंट्स चेम्बर ऑफ उत्तर प्रदेश एवं रोटरी क्लब ऑफ कानपुर मेट्रो के संयुक्त तत्वाधान में "हृदयघात से ग्रस्त मरीजों की सहायता (How to Help the patients of Heart Attack)" पर एक सत्र का आयोजन किया गया।

मर्चेंट्स चेम्बर के अध्यक्ष मुकुल टंडन ने आयोजित सत्र में पधारे हुए आगंतुकों एवं मीडियाकर्मियों का अभिनन्दन किया एवं प्रख्यात डॉक्टर्स डॉ. प्रदीप टंडन एवं डॉ. सुनित गुप्ता का आभार व्यक्त किया और कहा कि ऐसे प्रतिभावान व अनुभवी डॉक्टर्स ने अपना बहुमूल्य समय हम सबको दिया एवं अपना ज्ञान साझा करने के लिए उपस्थित हुए। श्री टंडन ने कहा कि हालाँकि चेम्बर, औद्योगिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी सत्र कई दशकों से आयोजित करता रहा है परन्तु ऐसा पहली बार होगा जब हम सब प्रोजेक्टर द्वारा लाइव स्क्रीन पर कृत्रिम हृदय के माध्यम से हृदय की क्रिया-कलापों एवं हृदय सम्बन्धी विभिन्न कारकों से अवगत होंगे। साथ ही हम सब अपने डॉक्टर्स की टीम से इस बात से भी अवगत होंगे कि हृदयघात पड़ने पर घर पर या अस्पताल पहुंचने के रास्ते पर किया जाने वाला प्राथमिक उपचार क्या हो सकता है।

प्रख्यात डॉक्टर्स की टीम डॉ. प्रदीप टंडन एवं डॉ. सुनित गुप्ता ने संयुक्त रूप से लाइव स्क्रीन पर कृत्रिम हृदय के माध्यम से हृदय की क्रिया-कलापों एवं हृदय सम्बन्धी अन्य गतिविधियों की जानकारी दिया।
हृदयाघात एक तरह से अकस्मात होने वाली बीमारी है जिसका पूर्वानुमान शायद लगाया भी जा सकता है और हम सब यदि सतर्क रहें तो काफी हद तक बचा भी सकता है। अक्सर हमारे आस-पास ऐसी घटनाएं होती है जिनका असर हमें तुरंत दिखता है लेकिन हम समझ नहीं पाते है कि ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए जैसे, चक्कर आना और गिर जाना, किसी तेज गन्ध आ अचानक सूंघ लेना, बिजली से चिपकना, डूबना आदि आकस्मित मौत का कारण। ऐसी स्थिति में हमें पीड़ित व्यक्ति पर प्राथमिक उपचार के तौर पर सी.पी.आर. (Cardiopulmonary Resuscitation) तकनीक का उपयोग कर सकते है।
उक्त परिस्थितियों में शरीर के महत्वपूर्ण अंगों तक ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाती है और पांच मिनट के अंदर दिमाग तक ऑक्सीजन का पहुंचना आवश्यक है, इस स्थिति में हम सी.पी.आर. तकनीक का उपयोग करना चाहिए ताकि ऑक्सीजन का तुरंत प्रभाव शुरू हो सके। सी.पी.आर. में दिल (कार्डिओ) व फेफड़े (पल्मोनरी) जो कि काम करना बंद कर देते है, उन्हें छाती दबाने व मुंह में वायु फूकने से ऑक्सीजन शरीर के जरुरी अंगों तक पहुंचने की कोशिश करते है। बेसिक लाइफ सपोर्ट (प्रशिक्षित व्यक्ति कर सकता है) व एडवांस लाइफ सपोर्ट (अस्पताल में किया जाता है) दो तरह के सी.पी.आर. होते है।
बेसिक लाइफ सपोर्ट में तीन तरह की क्रियाएँ होती है जैसे स्वाँस लेने का रास्ता, स्वाँस लेना और खून का प्रवाह। बेसिक लाइफ सपोर्ट सी.पी.आर. सीख करके आसानी से पीड़ित को दिया जा सकता है जैसे पीड़ित की छाती को दबाते रहना चाहिए और इसी बीच में स्वाँस मरीज को दी जानी चाहिए लेकिन ध्यान रहे कि अत्यंत सावधानीपूर्वक यह क्रिया करनी चाहिए जिससे सी.पी.आर. देना व्यर्थ न हो।
डॉक्टर्स ने बताया कि हम सबको उपरोक्त के साथ-साथ अपने खान-पान का नियमित ध्यान रखना चाहिए और संतुलित व स्वस्थ भोजन का सेवन करना चाहिए।

सत्र का संचालन श्री अजय गुप्ता ने किया एवं श्री विजय पुरवार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।
सत्र में मुख्य रूप से श्री उमेश पाण्डेय, चेम्बर के सचिव श्री महेंद्र नाथ मोदी, चेम्बर व रोटरी क्लब ऑफ कानपुर मेट्रो के सदस्यगण परिवार सहित उपस्थित थे।